29/2/68

प्रातःक्लास 29-2-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। तुम बच्चों का आज है सतगुरुवार। बाकी जो मनुष्य मात्र हैं उनका है गुरुवार। क्योंकि बाप तुमको सत्य ज्ञान सुनाते हैं। और बाकी वह सभी झूठ ज्ञान ही सुनाते हैं। हर बात में झूठ ही झूठ है। अभी तुम बच्चे समझते हो बराबर यह हमारा बेहद का बाप है। सभी का बताना है। कोई का पता नहीं है कि हमारा बेहद का बाबा भी है। हद के बाप को, उनकी बायोग्राफी को, वर्से को जानते हैं। बेहद के बाप को नहीं जानते तो उनकी बायोग्राफी को वर्से को भी नहीं जानते हैं। बच्चों को समझाया है एक है ज्ञान दूसरी है भक्ति। ज्ञान से दिन होता है, तुमको बेहद का वर्सा मिलता है 21 जन्मों के लिए। लौकिक बाप से अल्प काल का सुख मिलता है। तो ऐसा जो बेहद का बाप है उनकी श्रीमत पर चलनी चाहिए ना। वह समझाते हैं। तुम बच्चों को सतोप्रधान विश्व का मालिक बनाते हैं। यह तुम बच्चों ने ही बाप से वर्सा पाया है। बाप है स्वर पवित्र। मनुष्य तो स्वर पवित्र हो न सकें। क्या यह (ल०ना०) स्वर पवित्र रहेंगे? तुम पुरुषार्थ करते हो यह बनने लिए तो क्या तुम स्वर प्युर रहेंगे। अपवित्र तो जरूर बनना ही है। सीढ़ी नीचे जरूर उतरेंगे। तुमको पता थोड़े ही था हम सो देवता थे फिर हम सो क्षत्री, वैश्य शूद्र बने हैं। अभी बाप ने समझाया है। तुम पहले2 याद भी करते थे। तुम अव्यभिचारी पूजा करते थे। अभी तुम भक्त नहीं हो। अभी ज्ञान मिला है। तुमको कहते हैं इन देवताओं की निन्दा क्यों करते हो। क्यों कहते हो एक शिव के सिवाय बाकी सभी की जयन्ती कौड़ी तुल्य है। बोलना चाहिए पहले तो बताओ अब यह कहां है? भगवानुवाच, बहुत जन्मों के अन्त में मैं आता हूं। तो पतित बन जाते हैं ना। यह तो अभी हैं नहीं। इनकी आत्मा कहां गई? यह भी समझने की बात है ना। भगवान बैठ समझाते हैं यह 84 जन्म तो लेते ही हैं। पहला नम्बरवन ही पुनर्जन्म में आते हैं। तो जरूर सभी पुनर्जन्म में आवेंगे। पुनर्जन्म से कोई छूट न सके। बहुत जन्मों के अन्त में सब पतित बन जाते हैं। इनकी भी आत्मा पतित बनी है। बाप ने समझाया है। यह तो पतित बन गये हैं। फिर पतित की पूजा करने से तो और ही पतित बन जावेंगे। वह शरीर तो खलास हो गया। और आत्मा पुनर्जन्म लेते2 पतित बन गई है। अभी बाप कहते हैं पतित आत्मा की पूजा करने से क्या फायदा होगा। मैं तो स्वर पावन हूं। भक्ति मार्ग में तुम मुझ एक ही भक्ति करते थे। वह थी अव्यभिचारी। अभी भी तुमको एक को ही याद करना है। पूजा तो तुम ने बहुत की है। वह सभी हैं पतित। यह सारी दुनिया है ही पतित। पतित को यह करने का उनकी भक्ति दान-पुण्य आदि करने से क्या मिलेगा। यह सब तुम करते आये हो फायदा तो कुछ हुआ नहीं है। यह सब है रचना। तुमको वर्सा लेना है रचयिता से न कि रचना से। यह तो सभी पतित हैं। एक भी पावन नहीं हैं। शरीर तो इनकी खत्म हो गई बाकी आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बन गई है। अभी खुद पतित, पतित की पूजा करते फायदा तो कुछ भी नहीं। तुम गिरते ही आये हो। अभी फिर मैं आया हूं तुमको पावन बनाने। जो पतित बने हैं उनको ही पावन बना रहे हैं। मैं ही पतित-पावन हूं। बाकी तो सभी पतित, पापात्मायें हैं। यह (ल०ना०) जो पावन थे वह अभी पतित बन गये हैं। यह तुम भक्ति मार्ग में मूर्ति आदि बनाकर पूजा करते हो। वह आत्मा तो पतित है ना। इसलिए बाप कहते हैं भक्ति दुर्गति है। पापात्माओं की भक्ति करते2 तुम पापात्मा बन गये हो। इस दुनिया में पुण्यात्मा एक भी नहीं। इसलिए तुम्हारे लेन-देन पापात्माओं साथ है। पुण्यात्माओं से लेन-देन करने की दरकार ही नहीं। यह तो सतयुग में राज्य करते थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 नीचे उतरे, उनकी महिमा क्या करेंगे। जो देवतायें ज्ञान मार्ग में गिरे उनकी ही चित्र भक्ति मार्ग बना कर फिर पूजा बैठ की है। तुम ही खुद पूज्य थे सो फिर पुजारी बने हो। यह बात न समझने कारण मनुष्य कह देते भगवान ही सब रूप धरते हैं। भगवान ही पुजारी बनते हैं। अभी बाप बैठ आत्मा का ज्ञान तुमको देते हैं। पूजा भी आत्मा की होती है। भोगती आत्मा है। बाप कहते हैं मैं अभोक्ता हूं। मैं तो स्वर पवित्र रहता हूं। तुमको जब

कहते हैं इनकी(देवताओं) महिमा क्यों नहीं करते हो, तो हड्डी समझाना चाहिए। ऐसे भी नहीं एक ही बात कंठ कर लो। बड़ा युक्ति से समझाना है। विचार करना है बरोबर यह बात राईट है। बोलो आत्मा पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान बन गई, उनकी हम बैठ महिमा वा पूजा करें, क्या एवज मिलेगा। कुछ भी नहीं। यह है हो झूठी माया झूठी काया ... तुम्हारा लेन-देन पतित साथ है। सतयुग में यह पूजा, दान-पुण्य आद कुछ भी नहीं होता। क्योंकि वहां तो तुम पावन हो। यह सारी है नई2 बातें। कोई को पता ही नहीं है। कि यह अभी कहां है। तुमको पता है। बोलो हम उनकी 84 जन्मों की जीवनकहानी सुनाते हैं। आत्मा पतित तो शरीर भी पतित ही होगा। फिर हम पूजा क्यों करें। आत्माएं सभी पतित हैं। एक बाप ही पावन है उनको ही हम याद करते हैं। सिवाय एक बाप के दूसरा कोई है नहीं। भक्ति पहले अव्यभिचारी थी। अभी व्यभिचारी हो गई है। व्यभिचारी भक्ति से क्या फायदा। सन्यासी जो पहले सतोप्रधान थे वह भी अभी उतरते2 84 जन्म लेते2 अभी तमोप्रधान बन गये हैं। आजकल तो उनको भी पूजा करते हैं। है तो वह भी पतित ना। पावन तो कोई है नहीं। इसलिए तुम ने पूजा भी छोड़ दी है। अभी बाप ने समझाया है मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे। लौकिक बाप कब ऐसे कहते हैं क्या कि हमको याद करो। उनको तो सम्भालना ही है। बच्चे को बाप याद आता ही है। यह तो पारलौकिक बाप कहते हैं मुझे बहुत खुशी है याद करो। अन्दर में खुशी में गुल2 हो ना चाहिए। बाबा अभी तो हम आप को बहुत याद करेंगे। 24 घंटे के बदले 50 घन्टा हो तो भी याद करते रहेंगे। यह अन्दर में कहना होता है। बाप कितना फस्ट क्लास राय देते हैं। कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जायेंगे। फिर हम यह बन जायेंगे। भक्ति मार्ग में मनुष्यों की बुद्धि में अनेकों की याद आती है। शिव के मंदिर में जाओ तो वहां और भी ढेर चित्र रखे हुये होंगे। तो व्यभिचारी ठहरे ना। सभी के आगे सर झुकाते रहते हैं। गुरुओं के भी मूर्ति बना कर रखते हैं। पूछना चाहिए तुम ने यह मंदिर बनाया है वह आत्माएं कहां हैं? आत्मा तो है नहीं। बाकी क्या पूजा करेंगे। वा महिमा गायेंगे। बाप ने कहा ही है बहुत जन्मों के अन्त में ... तो पतित ठहराना। जो ल0ना0 पावन थे वह अभी पतित हैं। यह अच्छी रीत समझाना पड़े ना। कि क्यों नहीं उन्हीं को याद करते हो। भक्ति मार्ग में याद करते थे। अभी बाप ने ज्ञान दिया है कि यह सब कहां हैं। 84 जन्मों के अन्त में तो पतित ठहरे ना। देखो झाड़ के अन्त में खड़ा है। फिर क्यों कहते हो यह दादा को भगवान मानते हो, यह कहते हैं। यह तो समझने की बात है ना। यह बातें बहुत अच्छी रीत बुद्धि में धारण करनी है। बाबा जानते हैं नम्बरवार धारणा होती है। सभी को धारण हो न सके। जो न याद की यात्रा में रहते हैं, न देवी गुण है, उनको क्या धारणा होगी। बाप कहते हैं तुम मामेकं याद करो तो मालिक बन जायेंगे। बाप की आज्ञा का पालन नहीं करते हैं तो नाफरमानबरदार ठहरे ना। बाप कहते हैं अभी वह याद स्थाई नहीं ठहर सकेगी। माया भी लड़ाई इसमें ही होगी। तुम थक मत जाओ। और देवीगुण भी धारण करो। अपन से प्रतिज्ञा करो हम कब रोवेंगे नहीं। किसको दुःख नहीं देंगे। बाप जानते हैं बहुत झूठ बोलते हैं। सच्च कब नहीं बतायेंगे। कि फलाने को दुःख दिया। यह भूल की। सच्चे बाप के साथ तो सच्चा रहना चाहिए ना। झूठ भी तो पाप है ना। झट बतलाना चाहिए हम से यह भूल हुई। बतलाने से वह बन्द हो जायेगा। नहीं तो वृद्धि होती रहेगी।

बाबा के पास समाचार आया था कि कहते हैं तुम देवताओं की महिमा नहीं करते हो, कहते हो शिव जयन्ति ही हीरे तुल्य है तब तो ल0ना0 आद की जयन्तियां कौड़ी तुल्य है। वह देखते हैं शरीर को। हम तो आत्मा की बात करते हैं ना। आत्मा तो तमोप्रधान है ना। भगवान ने समझाया है देवताएं पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान आये बने हैं। हम भी पहले इन्हीं की पूजा करते थे अभी बाप ने कहा है कि यह सब तमोप्रधान हैं। मेरे को याद करनेसे ही तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। ऐसी युक्ति से तुम समझाओ

तो हीयर2 हो जावेंगे। कहेंगे यह तो बहुत ठीक समझाती है। खुद ही तमोप्रधान बनखुद ही महिमा करते रहते हैं। जैसे बाबा अपना भी बतलाते हैं। कल हम नारायण की पूजा करते थे, तमोप्रधान बन खुद ही खुद की पूजा करते थे। तब तो कहते हैं भारतवासियों ने खुद को ही मारी है चमाट। आपे ही पूज्य सो आपे ही पुजारी बने हैं। नीचे उतरे ही आये हैं। तो अब बताओ हीरे जैसा जयन्ति एक के सिवाय किसको कहें। बाप न होता तो सतोप्रधान कौन बनाता। बाबा पपईन्दस तो बहुत अच्छी गुह्य 2 देते रहते हैं। बच्चों से यह प्रश्न पूछा हेजस मुझे होंगे। जवाब दे न सके होंगे। इस युक्ति से समझावेंगे तो कहेंगे बात तो बरोबर ठीक है। बरोबर सभी पापात्मायें बन गये हैं। अभी बाप कहते हैं मैं आया हूं हीरे जैसा बनाने। उनकी ही हीरे जैसा जयन्ति है। सब की सद्गति करने वाला वह है। और तो सभी दुर्गति में हैं। यह तो अब सुना बहुतों ने। परन्तु उनको वाणी में मज़ा, वह शक्ति तब होगी जब योग में रह किसको सुनावेंगे। इसको कहा जाता है जौहर। बाप को याद नहीं करेंगे तो ताकत नहीं मिलेगी। इसका असर नहीं होगा। कहेंगे पता नहीं क्या सुनाते हैं। योग का बल चाहिए। ज्ञान को कमाई कहते, बल नहीं कहेंगे। पतित से पावन बनना योग की बात है। इसलिए बाप कहते हैं योग का सच्चा2 बार्ट भेजो। डायरी में नोट करो इतना समय बाबा को याद किया। फलाने टाईम याद कर सकते थे। क्यों नहीं किया। नोट करना चाहिए। लिखेंगे हम ने 5 मिनट, 2 मिनट भी मुश्किल याद किया बाप कहेंगे वाह तुम मेरे को याद नहीं कर सकते हो? तुम पावन बनने नहीं चाहते हो। बाबा चाट पर एकेक को समझावेंगे। तुम्हारा कैसेटर खराब है। मुरली भी नहीं सुनते हो तो अबसेन्ट हो गये। तुम तो नापास हो जावेंगे। वह होती है हद की पढ़ाई। यह है बेहद की पढ़ाई। बच्चों को यह ख्याल में आना चाहिए कि ओ हो बाबा ऊपर से आत्मा है हमको पढ़ा कर भगवान-भगवती बनाते हैं, बाप पढ़ा कर हमको आप समान बनाते हैं, यह किसको भी पता नहीं है। वही जो भगवान भगवती थे, वह अभी फिर क्या बने हैं। क्या हालत हो जाती है। समझते हैं गांधी रामराज्य स्थापन कर के गया है। रामराज्य किसको कहा जाता है, सतयुग क्या चीज़ है, कलियुग क्या चीज़ है कुछ भी पता नहीं। जैसे कि जंगली जानवर हैं। अभी तुम बदलते2 देवता बन जावेंगे। आधा कल्प रावण का राज्य भी न होगा। इस समय है भक्ति मार्ग की झूठ। सभी आत्मायें झूठी हैं। सच्ची की रूती नहीं। तमोप्रधान हैं। जब सच्ची भी रूती नहीं रहती है तो सच्चा बाप आकर फिर सच्चा बनाते हैं। यह ज्ञान बुद्धि में आना चाहिए। ऐसे भी नहीं ज्ञान सुन कर फिरकर में जाकर ठिकाना परलगावे। नहीं। तुम ऐसे देवता हो तो बात-चित भी थोड़ी, खान-पान आदि सब रायल होना चाहिए। अपनी अवस्था को जांच करनी है। हमारी स्थिति सतोप्रधान है वा रजो, तमोगुणी है। देवताई गुण यहां ही धारण करनी है। जब कर्मातीत अवस्थाको पा लेंगे फिर बाप को बहुतयाद करेंगे। बाप के सिवाय और कोई बात नहीं। जैसे वह राम2 जपते हैं, परन्तु अर्थ नहीं समझते रमआबजेक्ट कुछ नहीं। यहां तो तुम यह बनते हो। बाप कहते हैं तुम ऐसे तब बनेंगे जब ऐसे रहेंगे। जो पावन थे वही फिर पतित बने हैं। फिर हम पूजा किसकी करें। यह ज्ञान बाप ही आकर देते हैं। युक्ति युक्त समझाने में बड़ी अच्छी प्रैक्टीस चाहिए। घर में भी तुम मित्र-सम्बन्धी आदि को सुनाते रहो। गम के समय ऐसी2 बातें सुनाओ तो खुश हो जावेंगे। पतित आत्माने एक पतित छोड़ दूसरा लिया है। सीढ़ी तो उतना ही है ना। यह तुम समझ सकते हो। हरेक की पढ़ाई चलन से सारा मालूम पड़ता है। बाप तो रहमदिल कल्याणकारी है ना। बाप जानते हैं मैं आया हूं राजयोग सिखलाने। राजा बनने लायक तो महारथी ही होंगे। जो अच्छी सर्विस करेंगे वह ऊंच पद पावेंगे। नहीं तो प्रजा में चले जावेंगे। पुरुषार्थ तो करना चाहिए ना। बाप तो कहते हैं मैं पढ़ाने आया हूं। नहीं पढ़ते तो लज्जा आनी चाहिए ना। पुरुषार्थ कर नम्बरवन में जाना है। बाप तो बच्चों को कहेंगे पहले नम्बर में जाओ। मेरे को फालो करो। बायन भी है ना फालो फादर। वह तो सुप्रीम फादर है। बाप कहते हैं मेरा पार्ट बिलकुल अलग है। मैं कब पतित नहीं बनता हूं। और तो सभी पतित बनते हैं। ओम।